डॉ. अश्वनी शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद में सह-प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। बी.ए. ऑनर्स राजनीति विज्ञान व एम.ए. राजनीति विज्ञान, आत्मा राम सनातन धर्म कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से किया। दिल्ली विश्वविद्यालय के केंद्रीय शिक्षा संस्थान से बी.एड., एम.एड., एम, फिल. (शिक्षा), पी.एच.डी. (शिक्षा), में किया है। उर्दू भाषा की शिक्षा मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी से प्राप्त की है। लगभग 35 शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। लगभग 20 संपादित पुस्तकों में अध्याय लिखें है। पंचायती राज का शैक्षिक संदर्भ, भारत में पंचायती राज: एक समसामयिक विमर्श व शिक्षा में सामुदायिक सहभागिता नामक तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है।

डॉ. अजीत कुमार बोहत शिक्षण प्रशिक्षण एवं निरोपचारिक विभाग (आई.ए.एस.ई), शिक्षा संकाय, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली में सहायक प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। इतिहास विषय में स्नातक व स्नातकोत्तर किया है। बी.ड., एम.एड., एम. फिल. केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय से किया है। पी.एच.डी. (शिक्षा) शिक्षण प्रशिक्षण एवं निरोपचारिक विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली से की है। इतिहास शिक्षण, शिक्षा के दार्शनिक-समाजशास्त्रीय आधार, सामाजिक विज्ञान शिक्षण, अध्यापक शिक्षा, शांति शिक्षा तथा शिक्षा के नीतिगत आधार क्षेत्रों में विशेषज्ञता रखते हैं। लगभग 25 लेख विभिन्न राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। लगभग 10 संपादित पुस्तकों में अध्याय लिखें है। वर्तमान समय में जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली में सहायक प्रॉक्टर व अकादमिक परिषद् के सदस्य भी हैं।

ACUMEN

ISBN 978-90-832026-1-7
9 789083 202617

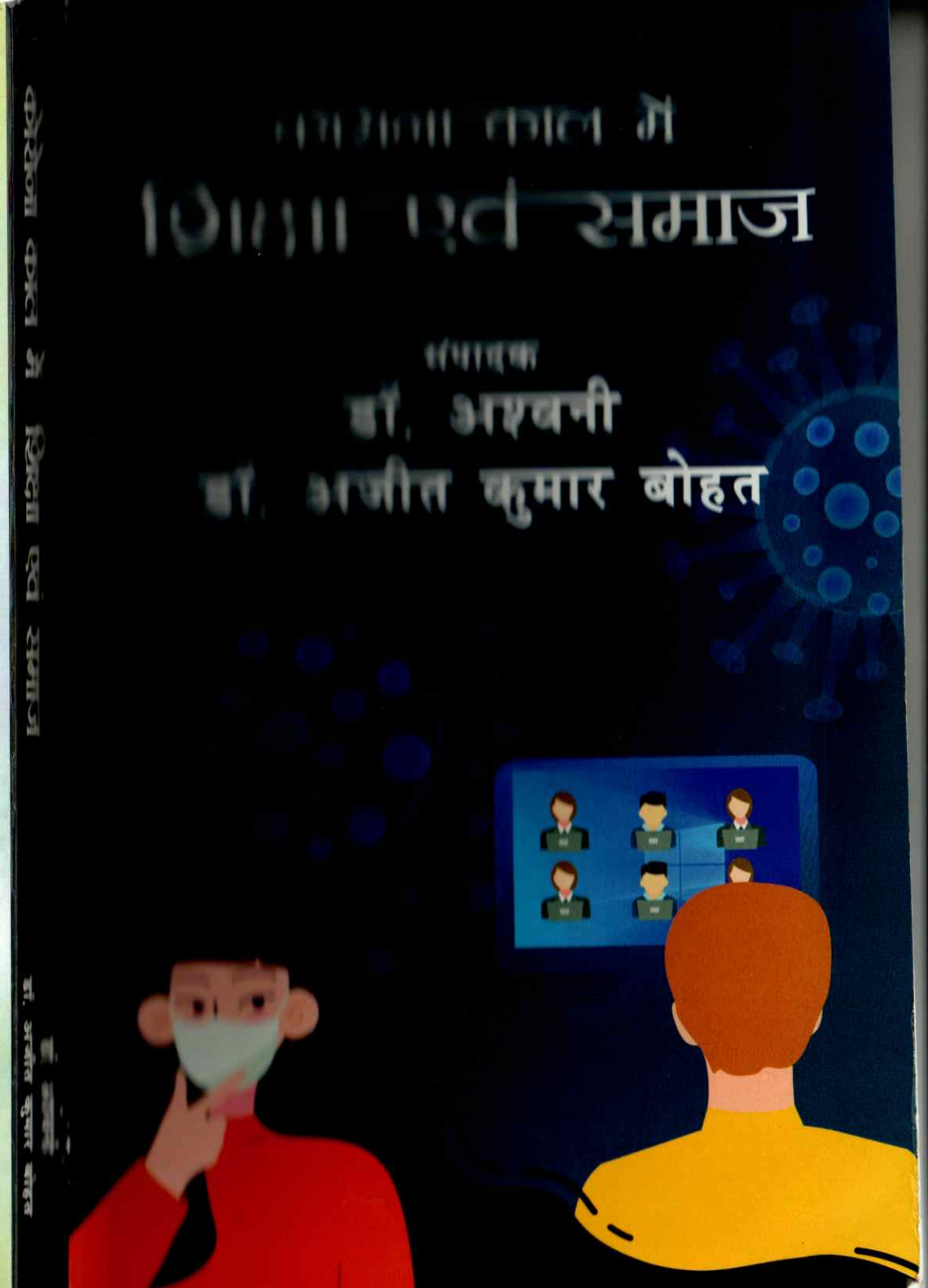

1	Name of the Book	Corona Kal Me Shiksha Yevam Samaj
2	Editor	Dr. Ashwani Dr. Ajith Kumar Bohath
3	Publisher	ACUMEN, Netherland
4	Year of Publishing	2022
5	ISBN Number	978-90-83202-61-7
6	Chapter Title	Corona Kal me Pravasi Majduron Kin Samasya
7	Name of the Author	Dr. Nazirunnisa S ISBN 978-90-83202-61-7
HEI: SJM College of Arts, Science and Commerce		
8	Page No,	217-222

S.J.M. COLLEGE CHITRADURGA Chandravalli,

PRINCIPAL
S. J. M. Arts Science & Commerce College
Hlk. Road, CHITRADURGA.

Title: Corona Kal Me Shiksha aur Samaj
Author: Dr Ashwani, Dr Ajit Kumar Bohet

First Edition: 2022

ISBN: 978-90-83202-61-7

Price: € 15

Published by:

Acumen Publishers

Amerikalaan 711, 3526 VZ,
Utrecht, The Netherlands
e-mail: acumenpublisher@gmail.com
www.acumenpublisher.com

© Publisher

Contents published in the book is provided by the author. The author is slolely responsibile for the same. Publisher's responsibility is limited to printing and marketing only. For any disputeè query related to content, authors and editors may be contacted.All rights reserved, No part of this publication may be reproduced, stored in a retrievalsystem or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying,recording andèor otherwise without the prior written permission of the publishers. Thisbook may not be lent, resold, hired out or otherwise disposed of by way of trade in anyform, binding or cover other than that in which it is published, without the prior consentof the publishers. Area of juridiction will be The Netherlands only.

कोरोना काल में शिक्षा जगत को छोड़ने वाले शिक्षकों व शिक्षाकर्मियों को समर्पित

पर प्रभाव 6.सामाजिक बिखराव बढ़ेगा 7.छात्र नेतृत्व क्षमता पर प्रभाव 8.समाज कल्याण रहित भावना 9.संगठनात्मक जीवन प्रभावित 10.राष्ट्रोन्मुखी दर्शन रहित जीवन 11.विद्यार्थी के चहुंमुखी विकास पर गृहण 12.यान्त्रिकी संचार माध्यम का गलत प्रयोग 13.राष्ट्रीय कैडेट कोर महत्वहीन 14.जिज्ञासा शांत यन्त्र बनता दूरभाष 15.राष्ट्रीय सेवा योजना आधारहीन 16.शिक्षा के दौरान अभिभावकी आदेश 17.अस्पृश्यता के बादलों का बढ़ता शोर 18.संसाधनों का अभाव 19.आंखों पर दुष्प्रभाव 20.अनपढ़ अभिभावक निगरानी में फेल 21.गरीब यन्त्र खरीदने में असमर्थ 22.संस्थानों व कर्मचारियों की अनुपयोगिता 23.ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में बिजली का अभाव 24.राज्य में अलग-अलग पाठयक्रम एक समस्या 25.समाज में लिंगभेद 26.यन्त्र एक हाथ अनेक 27. समय की कीमत की अनुभवहीनता 28. विद्यार्थी पर अवस्था का प्रकोप 29.मन पर दिल की जीत 30.गुरु बिन ज्ञान नहीं-मोक्ष नहीं। मानव का यह दोष रहा है कि वह सकारात्मकता चाहता है लेकिन विचारता नकारात्मकता है। इसलिए भारत सरकार ऐसे चलचलायमान का आविष्कार करे, जिससे सिर्फ पढ़ाई ही हो वरना राष्ट्र अपना भविष्य दांव पर लगाने जा रहा है। समझिए हम बहुत कुछ खो चुके हैं। कलम गई, दवात गई, स्लेट गई, तख्ती गई, बत्ती गई, मदरसा गया, गुरुवर गया, सब कुछ गया। हाथ रह गया एक यन्त्र। दिमाग छा गया एक मन्त्र।। गुरु-चेले देखो अन्तर। कैसे होगा चरित्र निर्माण? कब होना समाज-कल्याण? किसके हाथों राष्ट्रनिर्माण?

कोरोना के काल में प्रवासी मजदूरों की समस्या

नाजिरून्नीसा. एस
सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग एस.जे.एम. आर्ट्स,
साइंस, एंड कॉमर्स कॉलेज चन्द्रवल्ली, चित्रदुर्ग, कर्नाटक

भारत देश ने 2020 में कदम रखते ही दुनिया का सबसे भयानक रूप उसका इंतजार कर रहा था। 'कोरोना' जिसे 'कोविड-19' भी कहा जाता है। सबसे पहले कोरोना नामक भयानक वायरस का चीन के किसी एक छोटे गाँव में नवम्बर 2019 में पता चला। फिर वहाँ से वुहान नामक प्रदेश में फैला। इसके बाद तो सारी दुनिया में यह एक समुद्र की तरह फैलता गया। भारत भी इससे परे नहीं था। बल्कि यह भी कोरोना की चपेट में इस प्रकार आया कि, देश की जनता को तहस-नहस करके रख दिया। कोरोना सबसे ज्यादा मजदूरों को अपनी चपेट में लिए हुए है। प्रवासी मजदूर जो अपना और अपने परिवार का पेट भरने के लिए अपने गाँव छोडकर शहर गए हुए थे, वे लोग है जो काम की तलाश में कारखानों में, रास्तों का निर्माण करने, मेट्रो के निर्माण के लिए, रिक्शा चलाने, इमारतों का निर्माण करने के लिए आए थे। कोरोना के कारण देश में जब पूर्णबन्दी लगाई गई, तब इनका जीवन नारकीय हो गया। इसके कारण वे अपने गाँव में नहीं जा सकते थे और ना ही जहाँ है वहीं रह सकते थे। क्योंकि गाँव जाने के लिए पैसों की जरूरत थी और वहीं रहने के लिए सामाजिक दूरी का पालन करना था। ये दोनों ही परिस्थितियां कठिन थी। क्योंकि मजदूरी के नाम पर पैसे तो इनके पास नाम मात्र को आते थे। ये दैनिक मजदूर थे। उस दिन कमाना उसी दिन खाना का उनका जीवन था। सामाजिक दूरी को भी वे निभा नहीं सकते थे, क्योंकि एक-एक कमरे में दस-पन्द्रह लोग रहकर अपना जीवन गुजारते थे। विडम्बना तो यह थी कि जो लोग सिर्फ पैसा कमाने के लिए विदेश गए हुए थे। जिन्हें विदेशी